एक नहीं दो चूहे

जोसफ लो

हिंदी : विदूषक

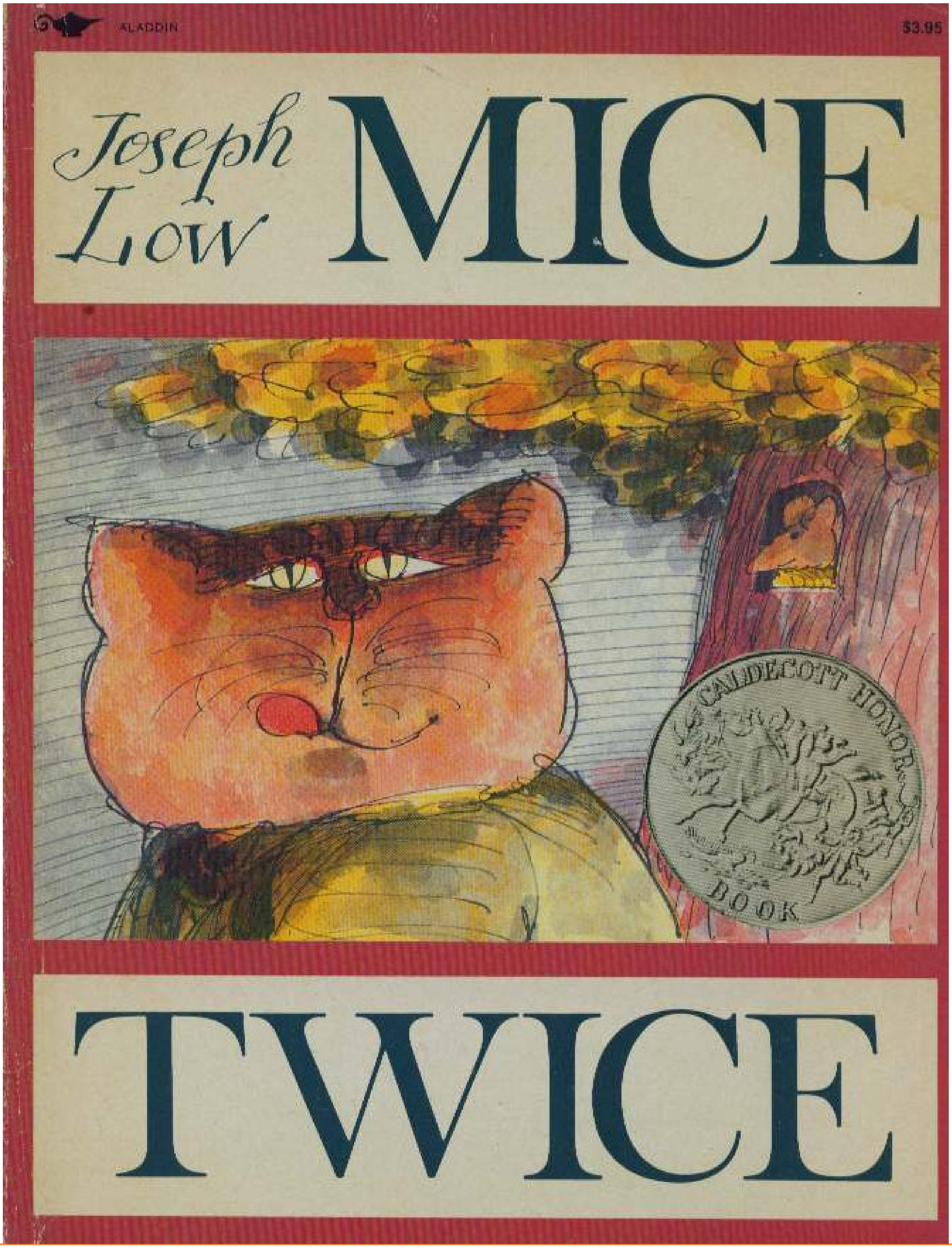

बिल्ली ने अपना गला साफ़ किया जिससे कि उसकी कर्कश आवाज़ कुछ मीठी लगे. फिर उसने कहा, “कितना प्यारा दिन है! मैं सोच रही थी, ‘कितना अच्छा होता अगर शाम को खाने पर कोई दोस्त मेरे साथ होता.’ मुझे उम्मीद है कि तुम ज़रूर शाम को मेरे साथ खाना खाने आओगी.”

चुहिया, बिल्ली को अच्छी तरह जानती थी, खासकर उसकी मक्कारी.
“क्या मैं अपने साथ में एक मित्र ला सकती हूँ?” चुहिया ने पूछा.

("एक नहीं दो चूहे!" बिल्ली ने अपनी मूंछे चाटते हुए सोचा.)

"बेशक," बिल्ली ने कहा. "ठीक है, फिर तुम शाम छह बजे आना."

"छह बजे का समय ठीक है," चुहिया ने कहा.

शाम छह बजे चुहिया ने बिल्ली का दरवाज़ा खटखटाया.
बिल्ली के पेट में चूहे कूदने लगे. “अन्दर आओ, स्वागत है!” उसने कहा.
पर जब बिल्ली ने दरवाज़ा खोला तो वहां पर कोई दूसरा चूहा नहीं था.

दूसरे चूहे की जगह वहां एक कुत्ता था.
कुत्ते का मुंह खुला था.
कुत्ता, बिल्ली से दुगना बड़ा था.

बिल्ली को बहुत गुस्सा आया, पर उसने अपना डर ज़ाहिर नहीं किया.
उसने मेहमानों को घर में आने दिया.
मेज़ पर पनीर के दो छोटे-छोटे टुकड़े रखे थे.

“आज कितनी गर्मी है!” बिल्ली ने कहा. “गर्मी में मेरी भूख गायब हो जाती है. आप लोग कृपा कर भोजन करें.”

उसके बाद चुहिया ने पनीर का एक टुकड़ा लिया,
और कुत्ते ने दूसरा.

पनीर खाने के बाद कुत्ते ने कहा, “मैंने इतना स्वादिष्ट पनीर पहले कभी नहीं खाया. क्या यह स्विस पनीर है?”
“नहीं, यह पनीर, फ्रेंच है,” बिल्ली ने कहा. “इसे मेरे भाई पियरे ने भेजा है.”

(असल में वो पनीर चूहेदानी में लगाने वाला एकदम साधारण पनीर था. कुत्ता और चुहिया दोनों यह बात अच्छी तरह जानते थे.)

कुत्ते ने कहा, “आपसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई. आशा है आप कल शाम को मेरे साथ खाना खायेंगी.”

बिल्ली ने एक पल के लिए सोचा. “मैं कल ज़रूर आऊँगी,” उसने कहा, “क्या मैं अपने साथ एक मित्र ला सकती हूँ?”

“ज़रूर! अच्छी संगत में ही तो खाने का मज़ा है,” कुत्ते ने कहा. “आप अपने मित्र को ज़रूर साथ लायें. क्या सात बजे का वक्त ठीक रहेगा?”

“बिल्कुल ठीक रहेगा,” बिल्ली ने कहा.

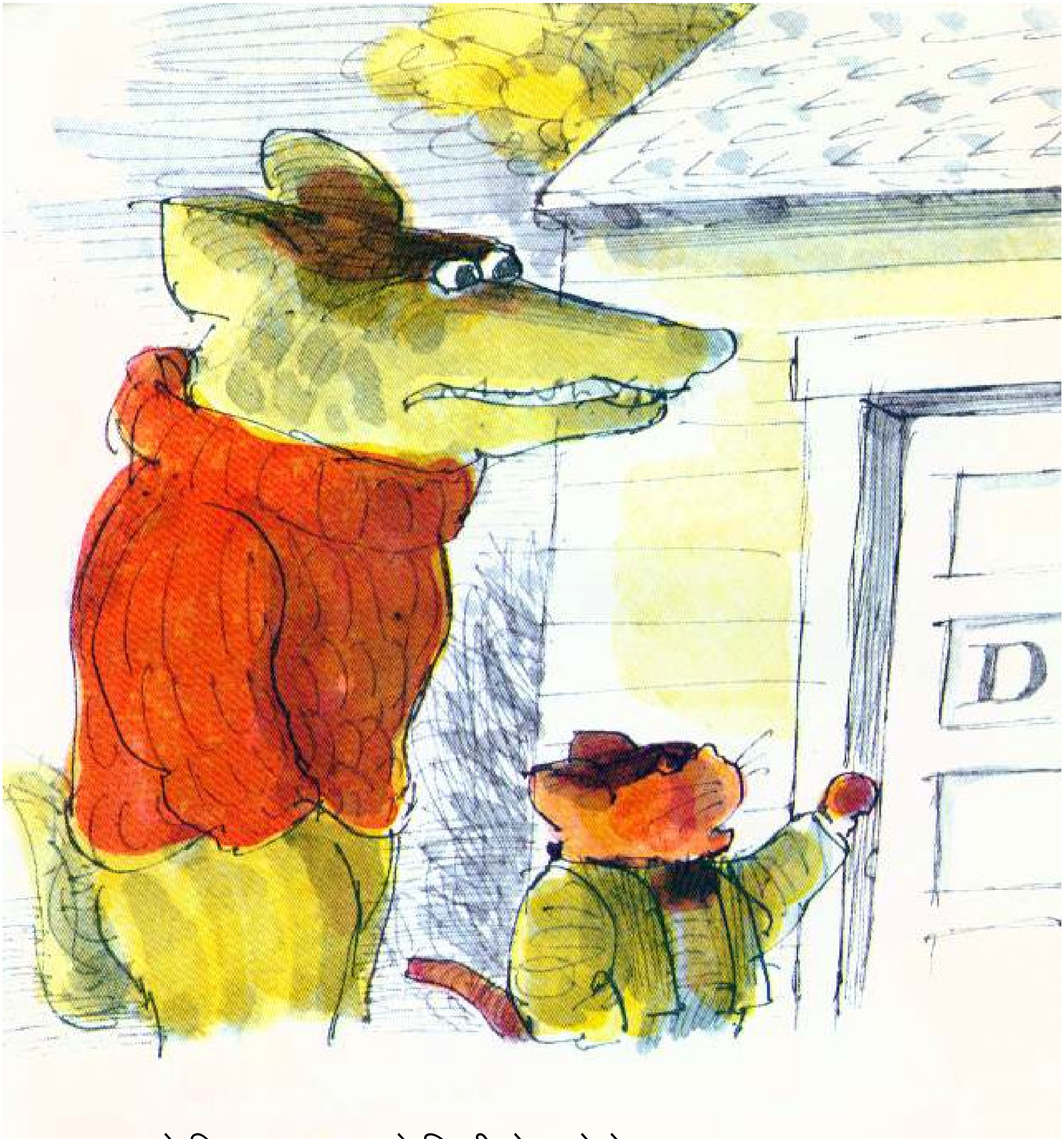

अगले दिन शाम सात बजे बिल्ली ने कुत्ते के घर का दरवाज़ा खटखटाया. बिल्ली के साथ में एक भेड़िया भी था – भेड़िया, कुत्ते से दुगना बड़ा था, और चार गुना ज्यादा खूंखार.

“अन्दर आइए!” कुत्ते ने मेहमानों से कहा.

बिल्ली ने भेड़िए की तरफ देखा और चुपके से कहा. “तुम्हारे लिए कुत्ता, मेरे लिए चुहिया. ठीक है न !”

भेड़िए ने कोई जवाब नहीं दिया, पर उसके चेहरे पर एक भयानक मुस्कराहट थी. उसके सारे नुकीले दांत दिख रहे थे. बिल्ली और भेड़िए दोनों ने अपनी मूंछों को चाटा.

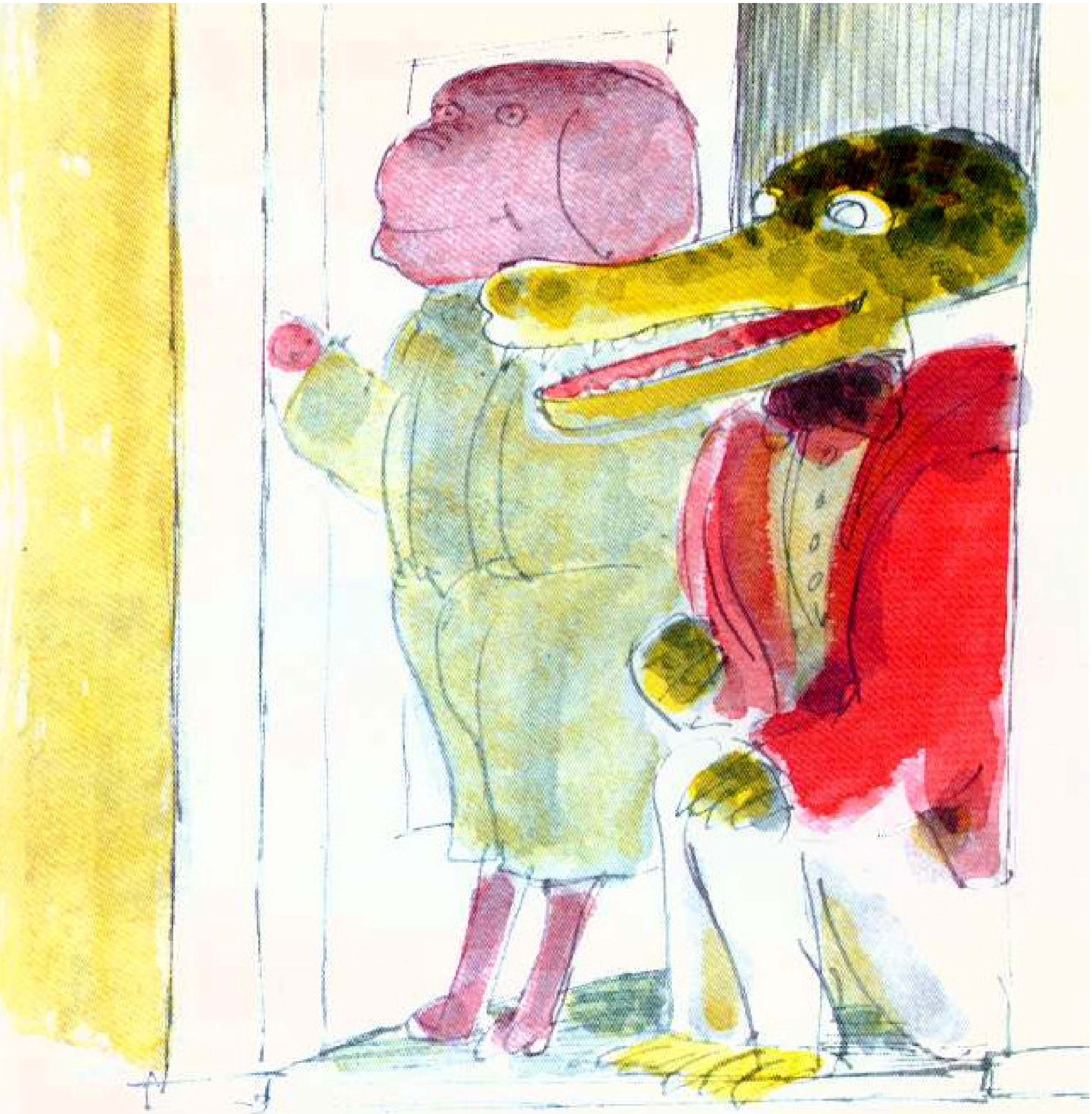

पर जब दरवाज़ा खुला तो कुत्ते के पास एक मगरमच्छ बैठा था. उसका लम्बा जबड़ा और नुकीले दांत बार-बार खुल रहे थे और बंद हो रहे थे. वो बिल्ली और भेड़िए को देखकर मुस्कुराया.

यह देखकर बिल्ली और भेड़िए का मुंह खुला-का-खुला रह गया. इतना बड़ा! इतना भयानक! इतने सारे बड़े और नुकीले दांत! वो अपनी नज़र मगरमच्छ से हटा ही नहीं सके. मेज़ पर पनीर के चार टुकड़े रखे थे, पर बिल्ली और भेड़िए ने उन्हें देखा तक नहीं.

“हां,” भेड़िए ने दरवाज़े की ओर देखते हुए कहा.

“सच में,” बिल्ली ने कहा, “आज हम दोनों को बिल्कुल भूख नहीं है. क्या हम किसी और दिन आ सकते हैं. हमारी तबियत भी आज कुछ खराब है.”

“यह बड़े दुःख की बात है!” कुत्ते ने कहा. “मुझे लगा आपको यह मुलायम फ्रेंच पनीर बहुत पसंद आएगा. इसे फ्रेंच में “ब्री” कहते हैं.

(और सचमुच में वो फ्रेंच “ब्री” था)

“हम किसी और दिन आयेंगे,” बिल्ली ने फुसफुसाया. फिर बिल्ली और भेड़िया दरवाज़े से जल्दी बाहर निकले.

बिल्ली ने एक पल सोचा. फिर मगरमच्छ की ओर देखते हुए उसने कुत्ते से कहा, “कल शाम आप मेरे घर पधारें. एक दूर का रिश्तेदार कल शाम मेरे घर खाने पर आ रहा है. बहुत अच्छा होगा, अगर आप भी आयें. हाँ, अपने मित्र को भी ज़रूर साथ में लायें.”

“ज़रूर, मुझे बहुत ख़ुशी होगी,” कुत्ते ने कहा.

“मैं मगरमच्छ को तो साथ नहीं ला सकता क्यूंकि उसे शाम को नदी में वापिस जाना है. अगर चुहिया राज़ी होगी, तो मैं उसे ज़रूर साथ में लाऊंगा. ठीक है न?”

“बहुत उम्दा!” बिल्ली ने कहा. बिल्ली ने अपनी मुस्कान को बड़ी मुश्किल से दबाया. “कल शाम आठ बजे मैं आपका इंतजार करूंगी.”

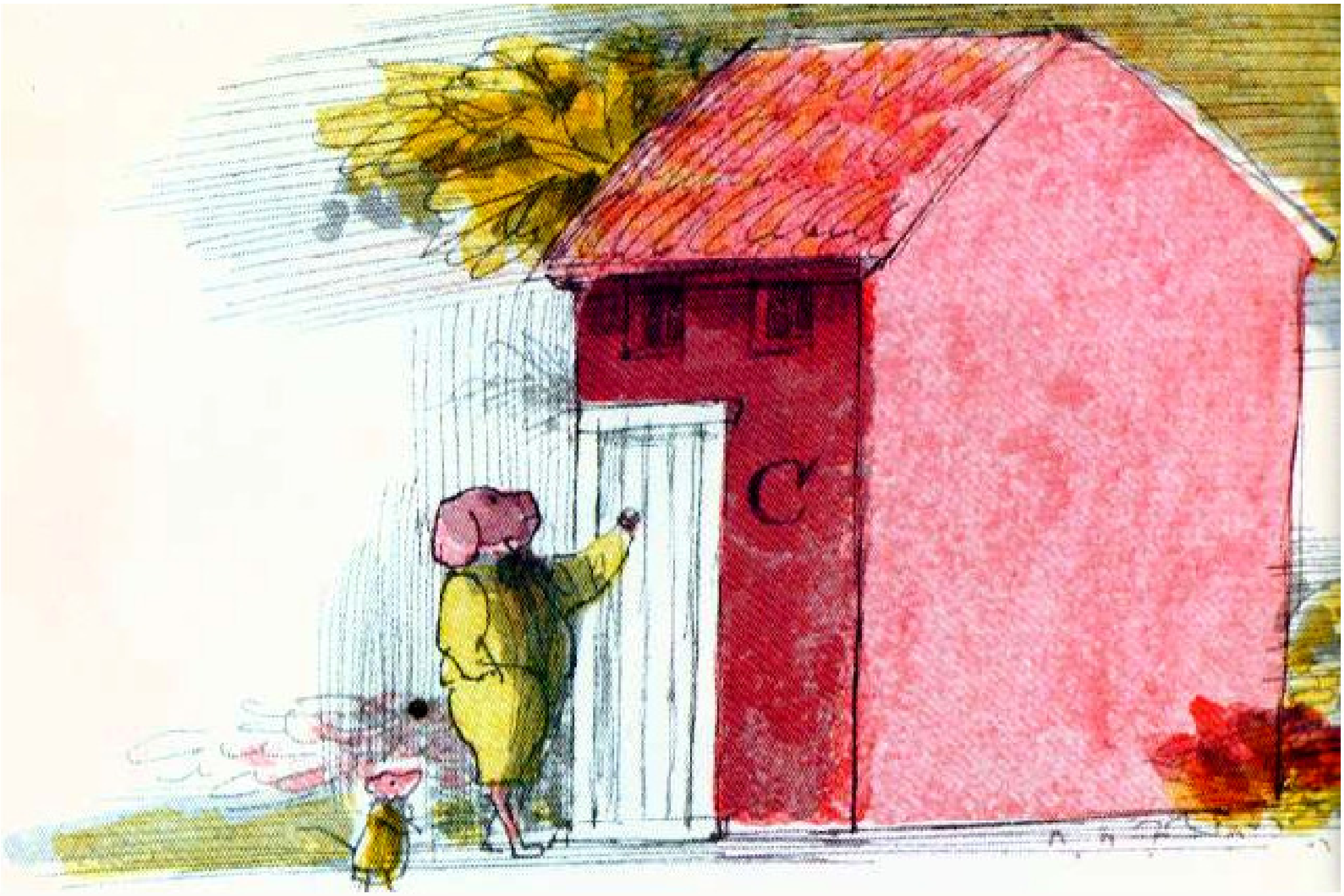

अगले दिन शाम आठ बजे, कुत्ते और चुहिया ने बिल्ली के घर का दरवाज़ा खटखटाया. बिल्ली के घर के अन्दर एक शेर बैठा था. शेर के डील-डौल से पूरा घर भर गया था. जगह की कमी के कारण बिल्ली को शेर के पंजों के बीच बैठना पड़ा. बिल्ली मुस्कुरा रही थी.

घर में बाकी जगह एक मेज़ से घिरी थी. उसपर बड़ी लज़ीज़ चीज़ें रखीं थीं, जिन्हें बिल्ली, शेर को खुश करने के लिए लाई थी. उनमें ताज़ी भुनी मूमफली, मोटी रसीली किशमिश, भुना मांस और पेपरमिंट की मिठाई थी.

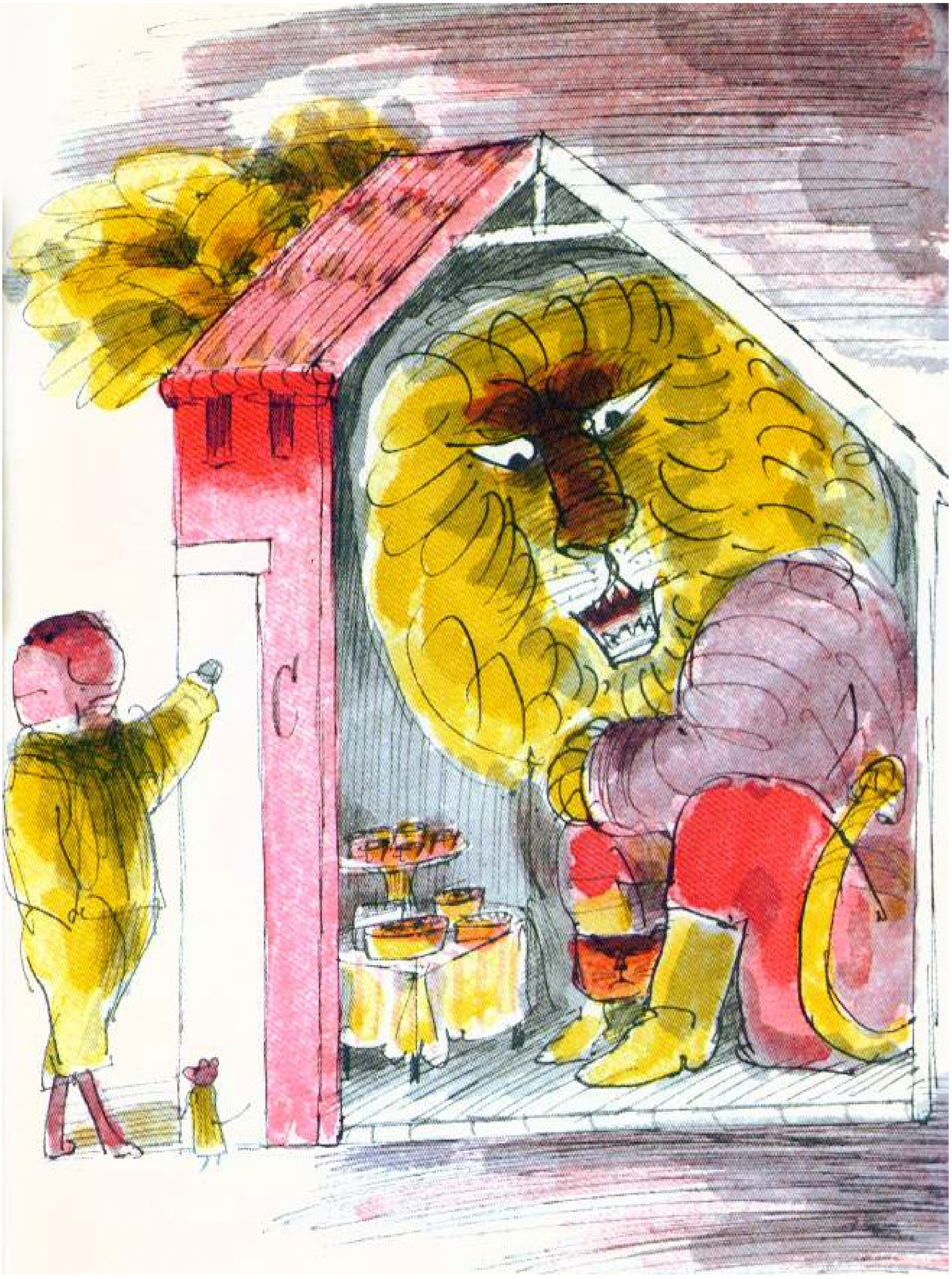

बिल्ली ने शेर की तरफ देखा और चुपके से कुछ कहा.

“जैसे ही दरवाज़ा खुलेगा, मैं चुहिया को दबोचऊँगी, और आप कुत्ते को पकड़ें. फिर मज़ा-ही-मज़ा आएगा!”

“वाह!” क्या बात है!” शेर ने अपनी मूछों पर ताव देते हुए और लाल जीभ को चट्कारते हुए कहा.

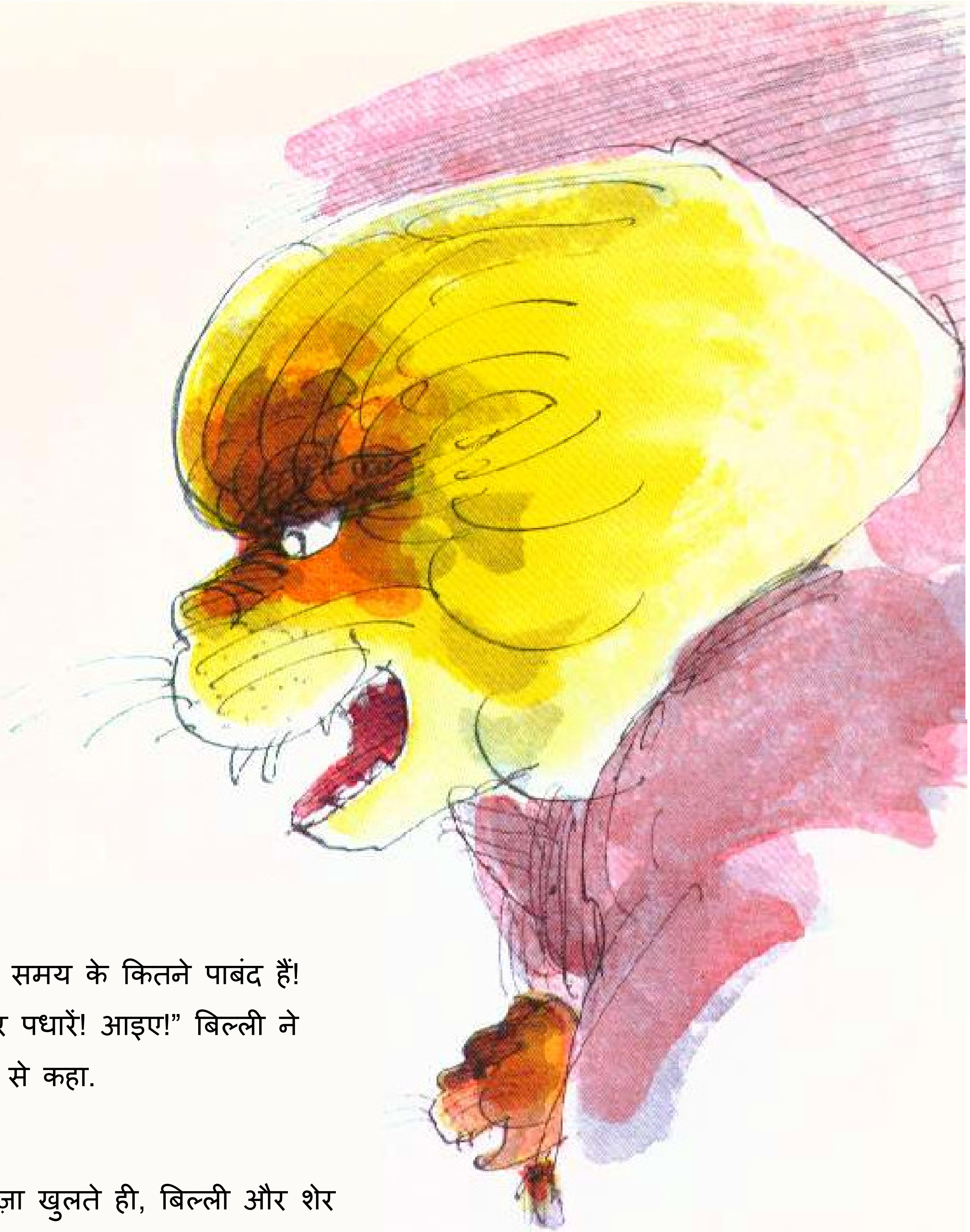

“आप समय के कितने पाबंद हैं! अन्दर पधारें! आइए!” बिल्ली ने कुत्ते से कहा.

दरवाज़ा खुलते ही, बिल्ली और शेर आगे को झुके.
दोनों के मुंह पहले से ही खुले थे.

बिल्ली और शेर की ततैया पर नज़र ही नहीं गई.

कुत्ता और चुहिया साथ में अपनी दोस्त - ततैया को लाए थे.

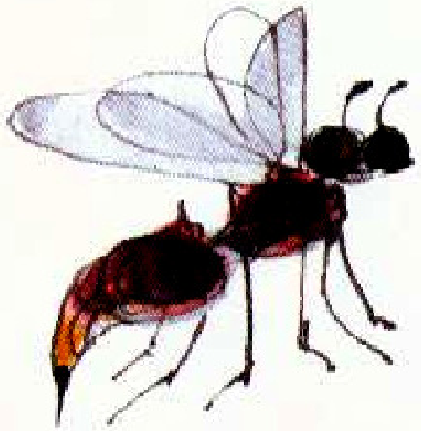

पलक झपकते ही, ततैया ने शेर की नाक पर डंक मारा.

फिर उसके कान पर हमला किया.

अंत में उसने शेर की लाल जीभ को काटा.

शेर एकदम पागल हो गया!

शेर ने पीछे जाने की कोशिश की,
पर बिल्ली के घर में जगह ही कहाँ थी.

आखिर में ततैया ने शेर के ओठों को काटा.

बदहाल शेर ने एक छलांग में, बिल्ली का घर तोड़ा और वो वहां से, अपनी दुम दबा के भागा.

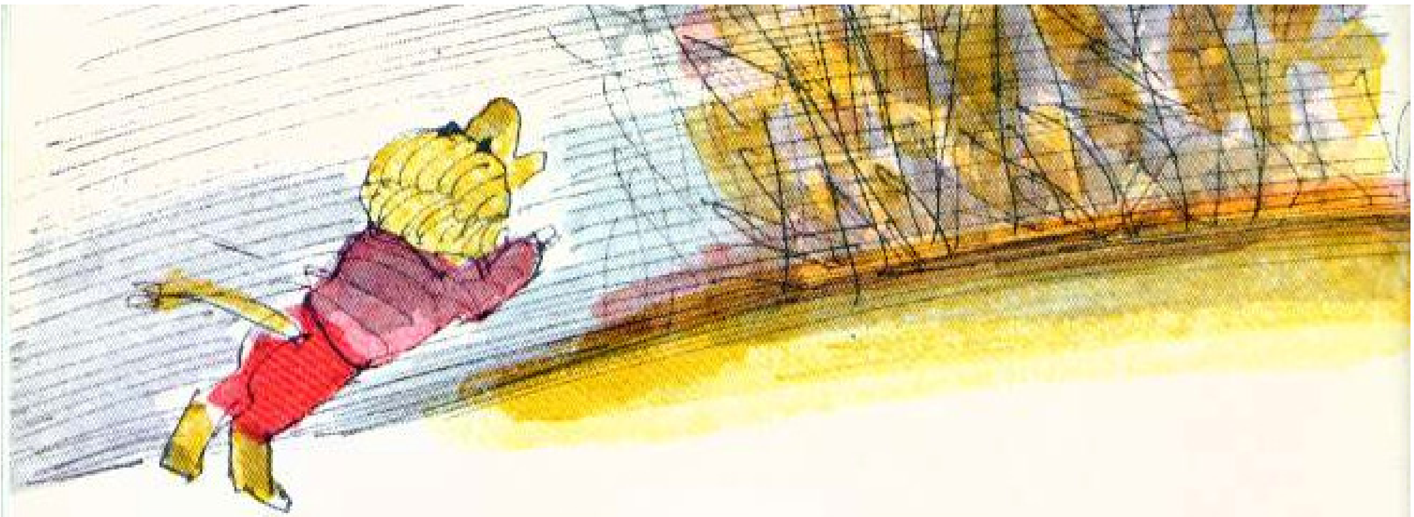

बिल्ली भी उसके पीछे-पीछे भागी.

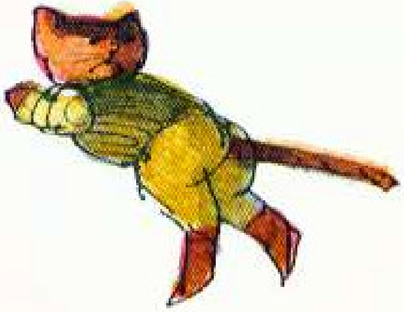

कुत्ता, बिल्ली के पीछे-पीछे भागा.

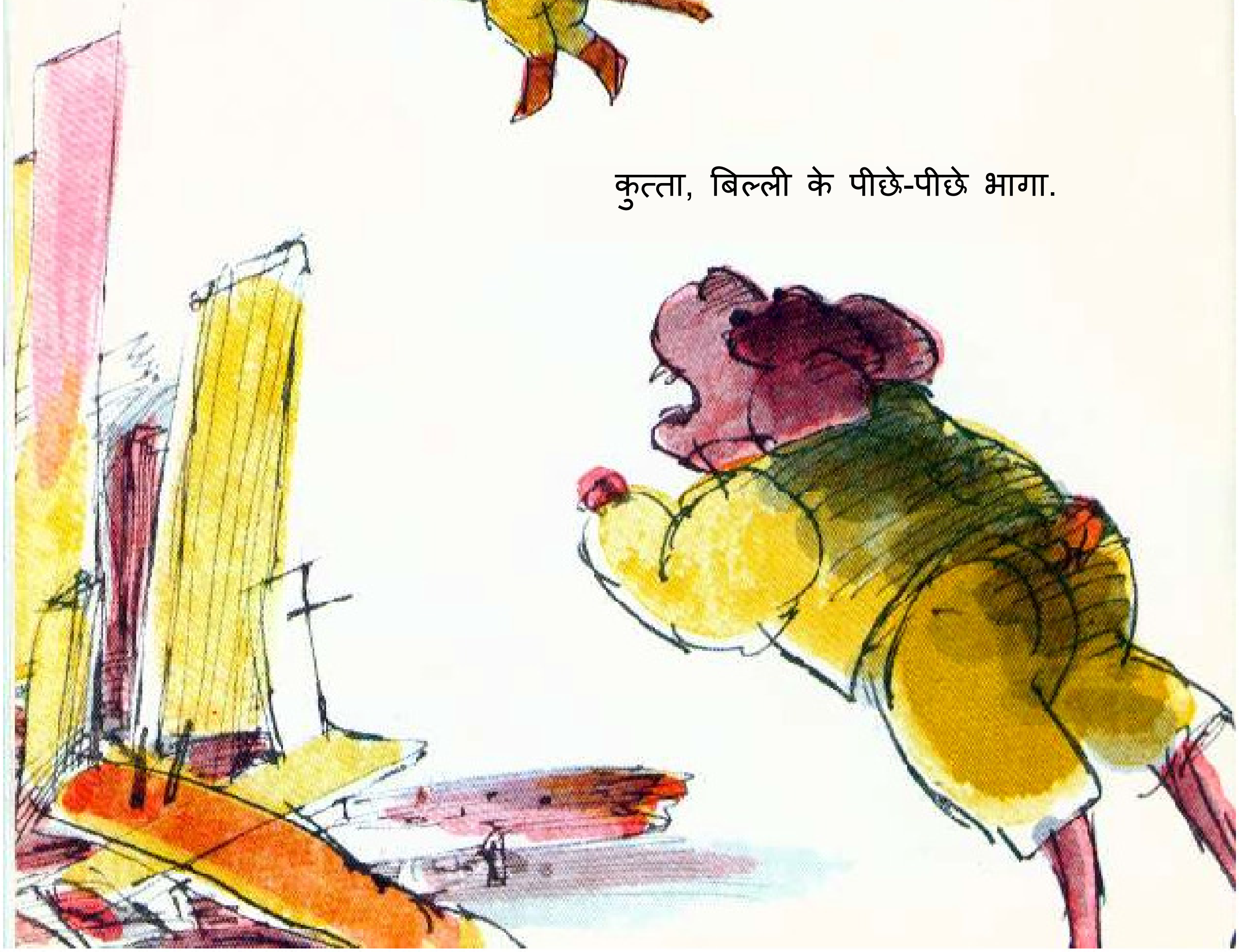

बिल्ली का घर चकनाचूर हो गया,
पर उसकी मेज़ अभी भी सुरक्षित थी.
उस पर रखी सभी स्वादिष्ट चीज़ें अभी भी वैसी ही रखीं थीं.

“मेरे प्यारे दोस्त,” चुहिया ने ततैया से कहा, “अब आपकी जो मर्जी हो आप वो खाएं. आपको वो छोटे केक ज़रूर पसंद आयेंगे! और पेपरमिंट की मिठाई भी. मैं खुद शुरुआत करूंगी मूमफलियों से. यहाँ हम सबके लिए बहुत खाना है. कुत्ता जब बिल्ली को खदेड़ के वापिस आएगा तो वो भी भर पेट खा सकता है.”

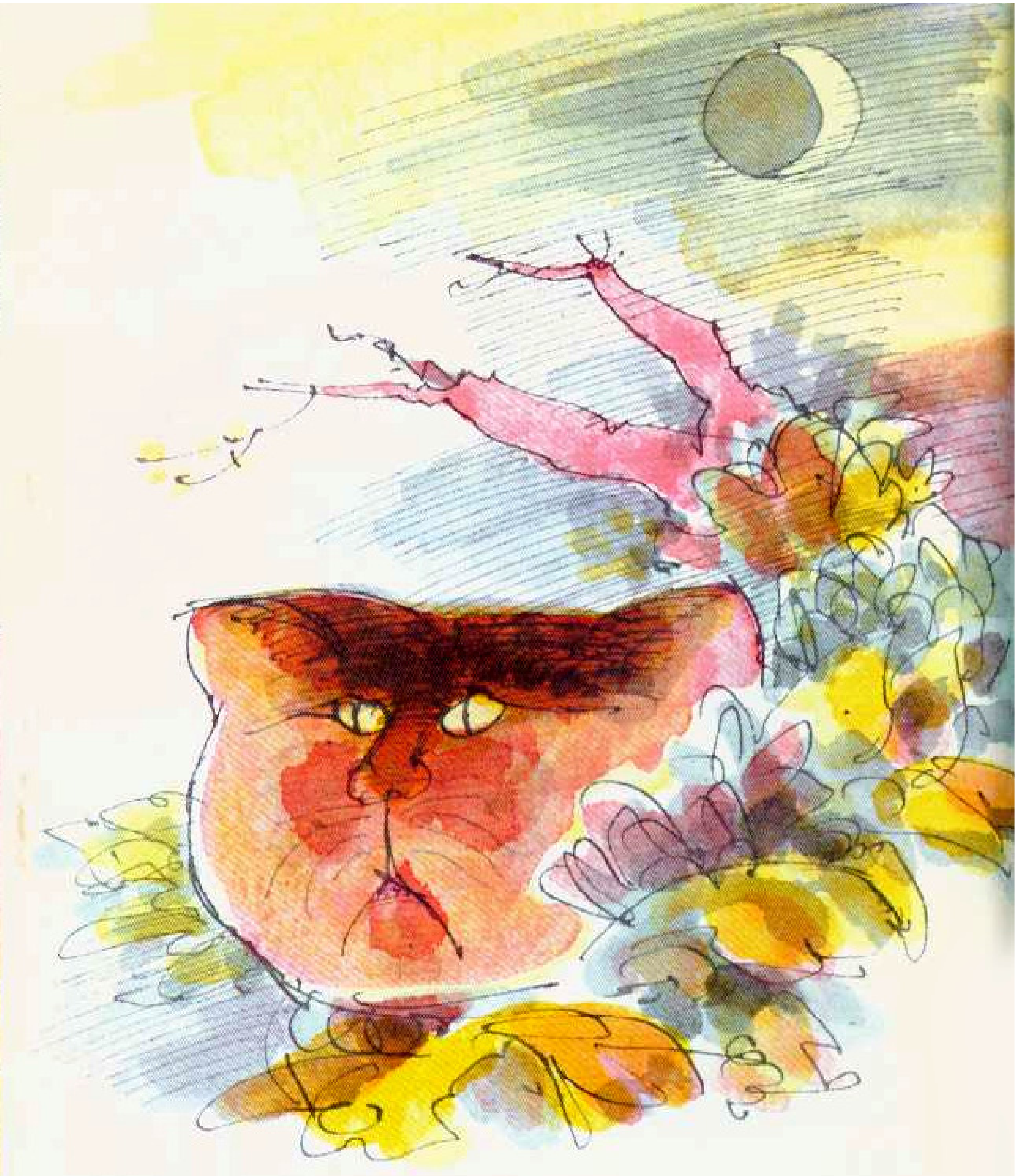

अगर बिल्ली बच भी जाती है, तो वो अपनी पूरी ज़िन्दगी चुहिया को कभी परेशान नहीं करेगी.

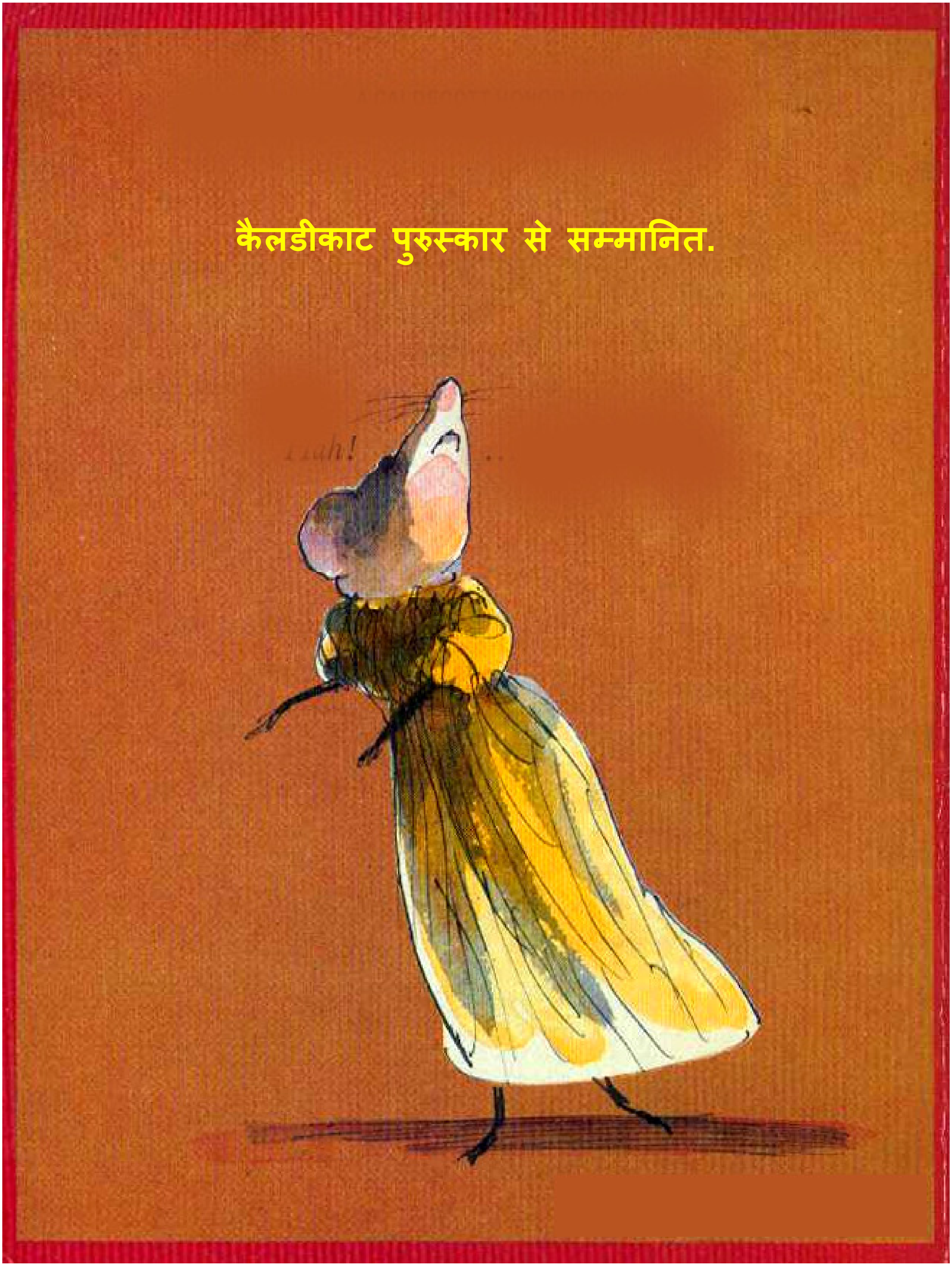
कैलडीकाट पुरुस्कार से सम्मानित.